अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

महातपस्वी महाश्रमण के ज्योतिचरण से पावन हुआ शुभम विद्या मंदिर

-सिरकाली से श्रद्धालुओं को पावन आशीर्वाद प्रदान कर आचार्यश्री पहुंचे सत्तनाथपुरम

-आचार्यश्री के पदार्पण से हर्षित विद्यालय प्रबन्धन, शिक्षकों आदि ने किया भावभीना स्वागत

-ईमानदारी के पग-पग पर है निधान: आचार्यश्री महाश्रमण

-स्कूली छात्रों सहित स्कूल प्रबन्धन ने भी श्रीचरणों अर्पित की अपनी विनयांजलि

07.01.2019 सत्तनाथपुरम, नागापत्तिनम (तमिलनाडु): सिरकालीवासियों को पावन प्रेरणा और मंगल आशीर्वाद प्रदान करने के उपरान्त सोमवार को प्रातः आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी धवल सेना के साथ मंगल प्रस्थान किया। आचार्यश्री लगभग चार किलोमीटर का विहार कर सत्तनाथपुरम स्थित शुभम विद्या मंदिर के निकट पधारे तो इस विद्यालय प्रबन्धन से जुड़े लोगों, शिक्षकों और विद्यार्थियों ने आचार्यश्री का भावभीना अभिनन्दन किया।

विद्या मंदिर के इस प्रांगण में आयोजित मंगल प्रवचन में आचार्यश्री ने समुपस्थित विद्यार्थियों व श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी सच बोलता है तो कभी-कभी झूठ का भी प्रयोग कर लेता है। दुनिया में सच्चाई का अस्तित्व है तो झूठ का अस्तित्व भी है। दुनिया में झूठ को विद्वानों, संतों और प्रबुद्ध लोगों द्वारा वर्जित किया गया है। झूठ अविश्वास का कारण होता है, इसलिए भी उसका वर्जन किया गया है। आदमी को झूठ से बचने का प्रयास करना चाहिए।

ईमानदारी के दो दुश्मन बताए गए हैं-झूठ और चोरी। आदमी को झूठ और चोरी का परिहार कर ईमानदारी और सच्चाई के मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए। झूठ हर तरफ से नुक्सान करने वाला होता है। झूठ बोलने वाले के यश का सर्वनाश हो जाता है। झूठ को यश का नाशक भी कहा गया है। झूठ बोलने से दुःख भी हो सकता है, इसलिए झूठ को दुःखों का कारण भी कहा जाता है। झूठे आदमी को कई बार कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ सकता है। जहां आतप होता है वहां छाया नहीं होती है, इसी प्रकार जहां झूठ हो, वहां संयम और तप नहीं हो सकता। मतिमान आदमी को मिथ्यावचन का प्रयोग नहीं करना चाहिए। आदमी को सच बोलने का प्रयास करना चाहिए।

सच्चाई और ईमानदारी के पथ चलने वाले के पग-पग पर निधान होता है। उसका विश्वास बढ़ता है, लोगों में उसका यश फैलता है। सच्चाई के रास्ते पर कभी-कभी कठिनाइयों का समाना तो करना पड़ता है, किन्तु बाद में सच्चाई माता मानों सफलता और सुख का खजाना खोल देती हैं। पहले सच्चाई मानों परीक्षा लेती है। ज्ञान को अमृत के समान पवित्र माना गया है और जहां ज्ञान का अर्जन होता है, वह स्थान भी पवित्र होता है। विद्यार्थियों में ज्ञान का विकास हो उसके साथ-साथ उनके आचरण में ईमानदारी का विकास हो जाए तो बच्चों का मन भी मंदिर बन जाएगा। आचार्यश्री ने वित्त और वृत्त का वर्णन करते हुए कहा कि दुनिया में वित्त तो उपयोगी हो सकता है, किन्तु बच्चों के वृत्त पर भी ध्यान देने का प्रयास हो और जीवन-विज्ञान का प्रयोग किया जाए तो बालपीढ़ी का अच्छा निर्माण हो सकता है। विद्यालय के द्वारा अच्छे व्यक्तित्वों का निर्माण हो सकता है।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने शुभम विद्या मंदिर को पावन आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि विद्यार्थियों में खूब ज्ञान का विकास हो। आचार्यश्री ने विद्यालय के संदर्भ में विद्यालय के संस्थापक, प्रबन्धक, प्रिंसिपल आदि को मंगलपाठ सुनाया। इसके पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने विद्यार्थियों को पावन संबोध प्रदान किया।

भावाभिव्यक्ति के क्रम में विद्यालय के संस्थापक श्री पी. ज्ञानचंद आंचलिया, ट्रस्टी श्री कृष्णकुमार माहेश्वरी, प्रबन्धक श्री सुदेश आंचलिया, प्रिंसिपल श्रीमती के. विद्या ने अपने भावपूर्ण हृदयोद्गार व्यक्त किए। बालक सौम्य और समिक आंचलिया ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। सुश्री श्रेजल मुड़ोत, श्री ताराचंद आंचलिया, सुश्री मैत्री आंचलिया, तथा श्रीमती इन्द्रा कोठारी ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। विद्यालय के छात्रों ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से आचार्यश्री की अभ्यर्थना की।